Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2503I01S01V13P0012

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research Mar'25
Issue–III(I), Volume–XIII

महादेवी वर्मा के साहित्य में वेदना और दुःखवाद

नाम- अजय (शोधार्थी)
हिंदी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।
मोबाइल नंबर- 8427221679,
ई-मेल- ajay58883@gmail.com

सारांश-
महादेवी वर्मा (1907-1987) हिंदी साहित्य के छायावादी युग की प्रमुख कवयित्री थीं, जिनके काव्य में वेदना और करुणा का गहन चित्रण मिलता है। उन्होंने अपने काव्य में विरह, पीड़ा और आध्यात्मिक अनुभूतियों को अत्यंत संवेदनशीलता से व्यक्त किया है। उनकी कविताओं में एक अज्ञात प्रियतम के प्रति विरह की तीव्र अनुभूति और उससे मिलने की आकांक्षा स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह विरह वेदना उनके काव्य का मूल तत्व है, जो उन्हें आधुनिक मीरा की उपाधि दिलाता है।
महादेवी वर्मा की वेदना वैयक्तिक होते हुए भी सार्वभौमिकता का स्पर्श करती है। उनकी कविताओं में आत्मा परमात्मा के मिलन की आकांक्षा, जीवन की नश्वरता का बोध, और आध्यात्मिक प्रेम की गहनता प्रकट होती है। उनकी कविताओं में विरह की पीड़ा, प्रेम की मूक अभिव्यक्ति और आध्यात्मिक रहस्यवाद का समावेश मिलता है, जो पाठकों को गहराई से प्रभावित करता है।

बीज शब्द- दुःख, दुःखवाद, विरह, वेदना।

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और साहित्य के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। महादेवी वर्मा, जो हिंदी साहित्य में आधुनिक मीरा के नाम से जानी जाती हैं, क्योंकि हिंदी साहित्य के छायावादी काल में ही नहीं, बल्कि संपूर्ण हिंदी साहित्य क्षेत्र में महादेवी वर्मा-सी सक्षम कवयित्री आज तक नहीं आई। पद्मश्री पुरस्कार के साथ-साथ भारतीय ज्ञानपीठ जेसे सर्वोच्च सम्मान भी प्राप्त हैं। जबकि हम जानते हैं कि आजकल के साहित्यकार किस तरह सम्मान-पुरस्कार प्राप्त कर लेते हैं, जैसे-कुछ साहित्यकार तो कुछ भी करके सम्मान प्राप्त करने के लिए ही लिखते हैं, बस उसी के लिए जन्मे हैं, लेकिन वरिष्ठ कवयित्री महादेवी वर्मा जी को पढ़ते-पढ़ते ऐसा लगता है कि उस तरह सम्मान-पुरस्कार महादेवी वर्मा जी के साहित्य के लिए बन गए हैं। उनकी रचनाएँ मुख्यतः छायावादी प्रवृत्तियों से प्रभावित हैं, जिसमें कोमल भावनाएँ, प्रकृति प्रेम, रहस्यवाद और वेदना की प्रधानता होती है।

काव्य में वेदना की प्रधानता

सब लोग दुःख से दो कोस दूर भाग जाते हैं, लेकिन महादेवी वर्मा जी ने दुःख के अत्यंत समीप जाकर दुःख को जानने-पहचानने की कोशिश की है। महादेवी वर्मा ने दुःखभरी नीर की कहानी के रूप में अपने साहित्य को संसार के सामने दर्शाया है और इस तरह का साहस भी शायद ही किसी साहित्यकार ने किया होगा। दुःखभरा साहित्य को सब लोग केवल नकारात्मक दृष्टि से देखने लगते हैं। महादेवी वर्मा जी ने मात्र गरीबी का हाहाकार, रुदन, दुःख, करुणा को पास जाकर देखा-परखा समझा और उसी को साहित्य सायना (साहित्यिक योग्यता वाला लेखन) बना लिया। इसीलिए वह हिंदी साहित्य में गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में मानी जाती हैं। नीहार, दीपशिखा, रश्मि, नीरजा, सांध्य-गीत, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, शृंखला

की कड़ियाँ, क्षणदा, हिमालय आदि उनकी अनेक अत्यंत लेकप्रिय एवं चर्चित किताबें हैं। महादेवी वर्मा जी ने सिर्फ कविता पर जोर नहीं दिया, बल्कि साहित्य की सभी विधाओं में उनका बहुत ही प्रशंसनीय योगदान रहा है। गौरतलब, उन्हें चित्रकला एवं संगीत में बड़ी रुचि थी। जब महादेवी वर्मा जी द्वारा कोई कविता या अन्य की विधा भी सृजित होती तो संसार के लौकिक विचारों से हटकर शाश्वत् विचारधारा में बहती थी।

महादेवी वर्मा के काव्य में वेदना एक केंद्रीय तत्व है। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा भाव है जो संसार को एक सूत्र में बाँधने की क्षमता रखता है। उनके अनुसार, सुख की अपेक्षा दुःख मनुष्य को अधिक संवेदनशील और मानवीय बनाता है। उनकी कविता 'मैं नीर भरी दुख की बदली' में वे अपनी वेदना को बादल की उपमा देती हैं, जो जीवन की अस्थिरता और अनिश्चितता को दर्शाता है। महादेवी का सम्पूर्ण कृतित्व प्रणय वेदना की अभिव्यक्ति का रूप बना है अपना परिचय भी उन्होंने इन्हीं शब्दों मे दिया है-

"मैं नीर भरी दुःख की बदली!
स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली।"[i]

अपने को नीर भरी दुःख की बदली मानने वाली कवयित्री अपना परिचय इतिहास के कल और आज में सीमित करती हैं। दुःख की बदली के अतिरिक्त कवयित्री ने आत्म-परिचय का दूसरा प्रतीक दीपशिखा चुना है। सतत् गतिशील-ज्वलनशील दीपक ज्योति सूनेपन एवं अंधकार की रानी है। दूसरों को देखने में वह बहुत सुखी लगती है किन्तु उसकी जलन का अनुभव देखने वाला नहीं कर सकता है-

"अपने इस सूनेपन की मैं हूँ रानी मतवाली।
प्राणों का दीप जलाकर करती रहती दीवाली।।"[ii]

उन्होंने जीवन और जगत से ग्रहण किये गये अनुभवों को आत्मसंयम, सहिष्णुता और अमर-प्रेम के संदेश के रूप में स्वीकार किया है। वेदना से अद्भुत समझौता तथा भारतीय वेदान्त और बौद्ध दर्शन का समन्वय करते हुए जिस जीवन को जीने के लिये वे अग्रसर है, उसमें स्वप्न की एक कल्पना और महामिलन की प्रतीक्षा विद्यमान है-

"चिर तृप्ति कामनाओं का कर जाती निष्फल जीवन,
बुझते ही प्यास हमारी पल में विरक्ति जाती बन।।"[iii]

स्नातकोत्तर कक्षाओं में दर्शनशास्त्र का विशेष अध्ययन उनकी कविता के दुःखवाद का कारण बना। असफल गार्हस्थ्य जीवन की प्रतिक्रिया ने वेदनानुभूति को दुःखवाद से सम्बद्ध कर उन्हें करुणा का अक्षय भण्डार दे डाला जो उनके समग्र काव्य जीवन व्याप्त होकर अव्यक्त का पर्याय बन गया। वेदना का यह अव्यक्त रूप उनके जीवन पथ का पाथेय बना। संसार से निराशा की जो प्यास मिली उसे उन्होंने इन्हीं आँसुओं का पान कर मिटाई-

"जीवन-पथ का दुर्गमतम-तल
अपनी गति से कर सजल-सरल

शीतल करता युग तृषित तीर।"[iv]

कवयित्री के नीहार की भाव-भूमि जीवन-भूमि का वह पथ है जहाँ प्रत्येक वस्तु क्षण भंगुर है-

"विकसते मुरझाये को फूल
उदय होता छिपने को चन्द
शून्य होने को भरते मेघ
दीप जलता होने को मन्द।"[v]

जगत की नश्वरता कवयित्री की दृष्टि में जीवन की वह अवस्था है जिसमें वेदना और पीड़ा की अनुभूति आरम्भ होती दिखाई पड़ती है जिसे इसके पूर्व उन्होने नहीं झेला था। नीहार की रचना किशोरावस्था की मनोवैज्ञानिक स्थिति सी जान पड़ती है। युवावस्था की आरम्भिक मनःस्थिति भी नीहार के गीतों में देखी जाती है। प्रिय मिलन के सुख से वंचित अमरता का लोक भी साधिका को इष्ट नहीं है। क्योंकि उसने अपने को मिटने के अधिकार से जोड़ा है। दुःख की इस अवस्था में प्रिय की करुणा का उपहार पाने की आकांक्षा कवयित्री की विरहिणी में विद्यमान है।

"क्या अमरों का लोक मिलेगा तेरी करुणा का उपहार,
रहने दो देव! अरे यह मेरा मिटने का अधिकार।"[vi]

अधिकांश समीक्षकों ने महादेवी के वेदना-वाद की समीक्षा करते हुए कहा है कि उनकी कविता में एक विरहिणी विद्यमान है जो आरम्भ से अन्त तक भावुक है किन्तु उनके काव्य-व्यक्तित्व की सूक्ष्म परिवर्तनशीलता को यदि कृतियों के वातायन से देखा जाए तो उसमें किशोरी के स्थान पर एक युवती विरहिणी दृष्टिगत होती है जिसकी कल्पनाएँ रंगीन और उदात्त है तथा उसका भाव-जगत् प्रणय की विरहानुभूतियों से प्रेषित पति का जगत् लगता है।

"इन उत्ताल तरंगों पर यह झंझा के आघात।
जलना ही रहस्य है, बुझना है नैसर्गिक बात।।"[vii]

विरह और आध्यात्मिकता

महादेवी वर्मा के काव्य में विरह की भावना अत्यंत गहनता से प्रकट होती है। यह विरह सांसारिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक स्तर पर है, जहाँ आत्मा परमात्मा से मिलन की आकांक्षा में व्याकुल है। उनकी कविताओं में एक अज्ञात प्रियतम की खोज और उससे मिलन की तीव्र इच्छा बार-बार उभरती है। यह रहस्यवादी प्रवृत्ति उनके काव्य को गहराई और उदात्तता प्रदान करती है।

प्रकृति चित्रण और प्रतीकात्मकता

महादेवी वर्मा ने अपने काव्य में प्रकृति के विभिन्न तत्त्वों का प्रतीकात्मक रूप से उपयोग किया है। संध्या, निशीथ, चाँदनी, उषा, पावस, वादल, विद्युत् आदि का प्रयोग उन्होंने अपनी वेदना और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया है। विशेष रूप से दीपक उनका प्रिय प्रतीक है, जो आत्मा की ज्योति, आशा और मार्गदर्शन का प्रतीक है। नीरजा की कवयित्री का व्यक्तित्व प्रियतममय हो चुका है। 'तुम मुझमें प्रिय फिर परिचय क्या'[viii]

अगणित युगों की प्यास मन में लिये हुए विरह को उपास्य का उपहार मानकर वह प्रिय के समक्ष अपना वास्तविक रूप प्रकट करना चाहती है-

"तू स्वप्न-सुमनों से सजा-तन, विरह का उपहार है।

अगणित युगों की प्यास अब का नयन अंजन सार है।"[ix]

निष्कर्ष

महादेवी वर्मा के काव्य में दुःखवाद केवल व्यक्तिगत वेदना का चित्रण नहीं है, बल्कि यह समस्त मानवता की पीड़ा, आध्यात्मिक खोज और अस्तित्व की गूढ़ता का प्रतीक है। उनकी रचनाएँ हमें यह सिखाती हैं कि दुःख जीवन का अभिन्न अंग है, जो हमें आत्मविश्लेषण, संवेदनशीलता और आध्यात्मिक उन्नयन की ओर प्रेरित करता है। उनका काव्य हिंदी साहित्य में वेदना और करुणा की अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है, जो आज भी पाठकों को गहराई से प्रभावित करता है।

---

[i]महावेदी वर्मा, सांध्यगीत ,इलाहाबाद : भारती भंडार लीडर प्रेस, 1975, पृ-49

[ii] महादेवी वर्मा, यामा, इलाहाबाद : भारती भंडार लीडर प्रेस, 1951, पृ- 10

[iii] महादेवी वर्मा, यामा(रश्मि), इलाहाबाद : भारती भंडार लीडर प्रेस, 1951, पृ-75

[iv] महादेवी वर्मा, नीरजा, इलाहाबाद : भारती भंडार लीडर प्रेस, 1978, पृ-11

[v] महादेवी वर्मा, यामा (नीहार), इलाहाबाद : भारती भंडार लीडर प्रेस, 1951, पृ-42

[vi] महादेवी वर्मा, नीहार, इलाहाबाद : साहित्य भवन, 1971, पृ-25

[vii] महादेवी वर्मा, यामा (रश्मि), इलाहाबाद : भारती भंडार लीडर प्रेस, 1951, पृ-78

[viii] महादेवी वर्मा, नीरजा, इलाहाबाद : भारती भंडार लीडर प्रेस, 1978, पृ-46

[ix] वही, पृ-38